सूकरों के लिये वार्षिक स्वास्थय कैलेंडर

कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र
संयुक्त निदेशालय प्रसार शिक्षा
भाकृअप-भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान
इज्जतनगर - 243122 (उ0 प्र0)

सूकरों के लिये वार्षिक स्वास्थय कैलेंडर

सूकरो के नवजात शिशु की देखभाल

- सूकर के नवजात बच्चों में रक्ताल्पता को रोकने हेतु प्रत्येक सूकर शिशु को आयरन सार्बिटाल सिट्रिक अम्ल जटिल/आयरन डेक्सट्रॉन/ मौलिक आयरनका इंजेक्सन /100 मिग्रा./कि. ग्रा.की दर से जन्म के तीसरे व बारहवें दिवस पर लगाना चाहिये।
- सूकर के नवजात बच्चों को दस्त से बचाव हेतु उचित स्वछता उपायों को करना अति महत्वपूर्ण है।

सूकरो में कृमिनाशनः–

- परजीवी नियंत्रण कार्यक्रम फार्म के प्रबंधन प्रणाली पर निर्भर करता है जो एक फार्म से दूसरे में अलग–अलग तरीके का हो सकता है।
- परजीवी का प्रसार एंव परजीवी बहुतआयत की निगरानी हेतु प्रत्येक बर्ष में दो बार मल के नमूने की परीक्षण करना चाहिये।
- स्थानीय क्षेत्रों में सूकर के नवजात शिशुओं में कृमिनाशन 2–3 सप्ताह की उम्र में प्रारंभ करना चाहिये और 6–8 सप्ताह की उम्र में दोहराना चाहिये।
- मादा सूकर और गिल्ट की फैरोइंग शाला में प्रवेश के 1–2 सप्ताह पूर्व कृमिनाशन कराना चाहिये।
- नर सूकर का प्रजन में उपयोग करने से कम से कम एक सप्ताह पूर्व कृमिनाशन करना चाहिये।
- सामान्य कृमिनाशक और उनके प्रभावशीलता का वर्णन नीचे दिये गये सारणी में किया गया है।

क्र. सं.	कृमिनाशक	औषधि का मात्रा	कृमि
1.	पइपेराजिन	200–300 मिग्रा/किग्रा शरीर का वजन	वयसक गोल कृमि एवं नोडलर कृमि के खिलाफ मध्यम श्रेणी का प्रभाव
2.	लिवामिसोल	7.5 मिग्रा/किग्रा शरीर का वजन	वृक्क कृमि, फुँफ्फुस कृमि, गोलकृमि एवं नोडलर कृमि
3.	फेनबेन्डाजोल	5–7.5 मिग्रा/किग्रा शरीर का वजन	गोलकृमि, नोडलर कृमि, जहर कृमि, वृक्क कृमि एवं फुफ्फुस कृमि
4.	आइवरमेक्टिन	0.2 मिग्रा/किग्रा शरीर का वजन	आंतरिक एवं बाह्य परजीवी

बाह्य परजीवी के नियंत्रण :–

बाह्य परजीवी के नियंत्रण के सिद्धान्त निम्नलिखित हैं :–

- बाह्य परजीवी नाशक को पशु आवास के फर्श एवं दीवारों पर लगाना चाहिये।
- बाह्य परजीवी नाशक का धूप और शुष्क मौसम में जानवरों पर छिड़काव करना चाहिये।
- बच्चा देने से पहले मादा सूकर को बाह्य परजीवी मुक्त रखना चाहिये।
- प्रजनन में उपयोग करने से पहले नर सूकर को बाह्य परजीवी मुक्त रखना चाहिये।
- दूध छुड़ाने से पहले सूकर में बाह्य परजीवी नाशक का उपयोग नहीं करना चाहिये।

कुछ महत्वपूर्ण उत्पाद जो सूकरों में बाह्य परजीवी नियंत्रण हेतु उपयोग में लाये जा सकते है–

- आइवर मेक्टिन ;1.0 इन्फेक्टेबलद्ध /300 माइक्रो ग्राम/किग्रा

शरीर के वजनानुसार या 1 मिली / 33 मिग्रा शरीर के वजनानुसार चमड़े के नीचे मार्ग से, दो इंजेक्शन पंद्रह दिवस के अंतराल में लगाना चाहिये।

- डेल्टामिथ्रीन (12.5 मिग्रा/मिली) विलयन का 3 मिली/लीटर जल की दर से बाहरी चमड़ी पर छिड़काव के लिये, उपर्युक्त का पंद्रह दिवस के अंतराल में दो बार प्रयोग किया जा सकता है।
- साइपरमेथ्रीन (1:10) विलियन का 3 मि.ली./लीटर जल में अनुपात में चमड़ी पर छिड़काव के लिये, उपर्युक्त का पंद्रह दिवस के अंतराल में दो बार प्रयोग किया जा सकता है।

सूकरों की टीकाकरण समय सारणी :–

क्र.	बिमारी	टीकाकरण समय		औषधि की मात्रा एवं विधि	विशेष
		प्राथमिक टीकाकरण	बूस्टर टीकाकरण		
1.	खुरपका मुंहपका रोग (FMD)	3–4 महीने की आयु में	प्रत्येक 6 महीने के अंतराल में	2 मि.ली. / व्यस्क गहरी मांस पेशियो में	● टीकाकरण करने से पहले पशुओं का कृमिनाशन करना चाहिये। ● गर्भवती पशुओं का टीकाकरण नही करना चाहिये।
2.	पारम्परिक सूकर ज्वर Classical Swine fever	2–3 महीने की आयु में	प्रतिवर्ष	1 मि.ली. / व्यस्क चमड़ी के नीचे	● टीकाकरण करने से पहले पशुओं का कृमिनाशन करना चाहिये। ● गर्भवती पशुओं का टीकाकरण नही करना चाहिये।

संरक्षण : **डा. राज कुमार सिंह**
निदेशक, भाकृअप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसांधन संस्थान, इज्जतनगर– 243122 (उ. प्र.)

मार्गदर्शन : **डा. महेश चन्द्र संयुक्त**
निदेशक, प्रसार शिक्षा (कार्यकारी), भाकृअप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर– 243122 (उ. प्र.)

लेखक : **डा. सुमित महाजन**
वैज्ञानिक औषधि विभाग

संपादन : **डा. रूपसी तिवारी**
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी एटिक, भाकृअप–भारतीय पशु चिकित्सा अनुसधांन संस्थान, इज्जतनगर–243122 (उ. प्र.)

अधिक जानकारी हेतु संपर्क

आई.वी.आर.आई. हेल्पलाइन : 0581-2311111
किसान कॉलसेन्टर : 1800-180-1551
आई.वी.आर.आई. बेवसाइट : www.ivri.nic.in